अंग्रेजी एंव विदेशी भाषा विश्वविद्यालय

THE ENGLISH AND FOREIGN LANGUAGES UNIVERSITY

हिंदी विभाग /**DEPARTMENT OF HINDI**

प्रथम सत्र /FIRST SEMESTER TIME TABLE

SEPTEMBER –DECEMBER -2023

(TENTATIVE)

DAYS	TIME TABLE				TUTORIAL CLASSES
	9:00 – 11:00		11:00- 1:00		2:00 - 4:00
MONDAY	SR		PR		MB
TUESDAY	SR		PR		MB
WEDNESDAY	PD		AR/MB		PR
THURSDAY	PD		AR/MB		AR
FRIDAY	9:00	10:00	11:00	12:00	
	PR	PD	SR	AR /MB	PD

Abbreviations- SR - Prof. Shyamrao Rathod
PD - Dr. Priyadarshini
PR - Dr. Promila
MB – Dr. Malobika
AR - Dr. Abhisheik Raushan

Course Papers and Paper in charge:

1.हिंदी साहित्य का इतिहास आदिकाल से रीतिकाल - --------- SR

2.प्राचीन एवं मध्यकालीन हिंदी ---------- AR/MB

3.हिंदी कथा साहित्य ------------------- PD

4. पत्रकारिता प्रशिक्षण --------- PR

– Communicative English / Any Foreign Languages, Swayam/ MOOCs

Head

हिन्दी विभाग, ईफ्लू
एम. ए. पाठ्यक्रम

प्रथम सत्र/FIRST SEMESTER

प्रश्न-संख्या : MAH 110 (Core Paper)

हिंदी साहित्य का इतिहास – आदिकाल से रीतिकाल

यह पेपर अनिवार्य हैं।

पाठ परिचय :-

इस पेपर का उद्देश्य छात्रों में साहित्येतिहास की समझ को विकसित करना है। यह सिद्ध है कि किसी रचना का निर्माण इतिहास के विशेष काल खंड और ऐतिहासिक परिस्थितियों का प्रतिफलन होता है। इतिहास की इन्हीं परिस्थितियों के साथ रचना की प्रवृत्तियों का तादात्म स्थापित करना इस पेपर का केन्द्रीय हिस्सा है। साथ ही हिन्दी साहित्य के विकास की गति और दिशा को रेखांकित करना है। हिन्दी साहित्य के इतिहास को आम तौर पर चार भागों में बाँटा गया है। इस पेपर के तहत आदिकाल से रीतिकाल तक साहित्य को इतिहास के विकास के साथ अध्ययन अपेक्षित है। इस काल के साहित्य के कालों के नामकरण, विभाजन, सीमांकन और युगीन परिस्थितियों और साहित्यिक प्रवृत्तियों का विश्लेषण कर छात्रों में साहित्य विवेक के साथ ही इतिहास विवेक की महत्ता को आधार प्रदान करना है।

- साहित्य का इतिहास दर्शन (साहित्येतिहास) –
  हिंदी साहित्य के इतिहास के पुनर्लेखन की समस्याएँ,
  हिंदी साहित्यके इतिहास का काल-विभाजन और नामकरण

- हिंदी साहित्य का आदिकाल – नामकरण और काल-सीमा, सिद्धसाहित्य, नाथसाहित्य, जैन साहित्य, रासो साहित्य, एवं अन्य रचनाओं का भाषिक एवं साहित्यिक वैशिष्ट्य
- हिन्दी साहित्य का भक्तिकाल – अवधारणा और काल-सीमा, भारत में भक्ति आंदोलन का उदय, दक्षिण भारत के भक्ति आंदोलन का उत्तर भारत के भक्तिआन्दोलन से संबंध; भक्ति आन्दोलन का स्वरूप, ऐतिहासिक पृष्ठभूमि, सांस्कृतिक चेतना, विभिन्न काव्य धाराएँ, उनका वैशिष्ट्य; निर्गुण और सगुण भक्त कवियों के दार्शनिक सिद्धांतों की व्याख्या; भक्तिकालीन साहित्य का प्रवृत्तिगत अध्ययन; भक्तिकालीन साहित्यका भाषिक वैशिष्ट्य; राम और कृष्णकाव्य, राम कृष्ण का व्येतर काव्य, भक्ति से इतर प्रवृत्ति का काव्य; भक्ति कालीन गद्य साहित्य
- हिंदी साहित्य का रीतिकाल – नामकरण और काल-सीमा; दरबारी संस्कृति और रीतिकाव्य; रीतिबद्ध, रीतिसिद्ध और रीतिमुक्त काव्य की अवधारणा; रीतिकालीन साहित्य का भाषिक वैशिष्ट्य; रीतिकालीन साहित्यिक वैविध्य का विश्लेषण

प्रमुख ग्रंथ:-

1. हिन्दी साहित्य का इतिहास	:	आचार्य रामचन्द्र शुक्ल
2. हिन्दी साहित्य उद्भव और विकास	:	आचार्य हजारीप्रसाद द्विवेदी
3. हिन्दी साहित्य का आदिकाल	:	आचार्य हजारीप्रसाद द्विवेदी
4. हिन्दी साहित्य की भूमिका	:	आचार्य हजारीप्रसाद द्विवेदी
5. हिन्दी साहित्य और संवेदना का विकास	:	रामस्वरूप चतुर्वेदी
6. हिन्दी साहित्य का दूसरा इतिहास	:	बच्चन सिंह
7. हिन्दी साहित्य का आलोचनात्मक इतिहास	:	डॉ. रामकुमार वर्मा
8. हिन्दी साहित्य का इतिहास	:	सं. डॉ. नगेन्द्र
9. हिन्दी साहित्य : युग एवं प्रवृत्तियाँ	:	शिवकुमार शर्मा
10. हिन्दी साहित्य का अतीत- भाग-1, 2	:	विश्वनाथ प्रसाद मिश्र
11. हिन्दी साहित्य का बृहत् इतिहास- भाग ४-५	:	देवेंद्रनाथ शर्मा, दीनदयाल गुप्ता, विजयेन्द्र स्नातक
12. हिन्दी साहित्य का बृहत् इतिहास- भाग ६	:	डॉ. भागीरथ मिश्र
13. हिन्दी काव्य की सामाजिक भूमिका	:	शम्भूनाथ सिंह
14. रीतिकाव्य की भूमिका	:	डॉ. नगेन्द्र
15. हिन्दी साहित्य का आधा इतिहास	:	सुमन राजे

प्रश्न-संख्या : MAH 1 20(Core Paper)

प्राचीन एवं मध्यकालीन काव्य

यह पेपर अनिवार्य हैं ।

पाठ परिचय :-

प्रस्तुत पेपर तीन इकाई में विभक्त जिनमें आदिकालीन, भक्तिकालीन कवियों एवं रीतिकालीन कवियों को शामिल किया गया है। यह पेपर पाठ आधरित है। इस पेपर में नौ कवियों की कविताओं को शामिल किया गया है। ये कवि हिंदी साहित्य के इतिहास के आदिकाल, भक्तिकाल और रीतिकाल से संबंधित हैं। इस पेपर का उद्देश्य छात्रों में कविता की समझ और आस्वादन को विकसित करना है। इन कवियों की पाठ व्याख्या के क्रम में छात्र मध्य-कालीन काव्यबोध, युगीन

परिस्थितियों के परिप्रेक्ष्य में कवियों की संवेदना उनकी सृजनभूमि एवं वर्तमान अर्थवत्ता और भाषिक वैशिष्ट्य से परिचित हो सकेंगे।

1. मध्यकालीनकाव्यबोध

2. काव्यांदोलनोंकीपरिस्थितियोंऔरप्रवृत्तियोंकापरिचय

इकाई -1 आदिकालीन कविता

अनुमोदित कवि :

1. सरहपा - दोहा कोश (संपादक: राहुल सांकृत्ययान)

2. विद्यापति के गीत कुल 5 पद ……

इकाई -2 भक्तिकालीन कविता

अनुमोदित कवि :

1. कबीर : हजारी प्रसाद द्विवेदी की पुस्तक (कबीर के परिशिष्ट में संकलित कुल 10 पद एवं दोहे)
2. सूरदास : भ्रमरगीत सार (सं. आचार्य रामचंद्र शुक्ल में संकलिक कुल 5 पद)
3. मलिक मोहम्मद जायली : जयसी ग्रंथावली (सं. रामचंद्र शुक्ल), नागमती वियोग, खंड तीन कड़वक, उपसंहार से दो कड़वक
4. तुलसीदास: रामचारितमानस के बालकाण्ड से 3 दोहे और चौपाई और उत्तरकाण्ड से 5 दोहे और चौपाई
5. मीराबाई: मीराबाई की पदावली (सं. परशुराम चतुर्वेदी) से 4 पद

इकाई -3 रीतिकालीन कविता

अनुमोदित कवि :

6. बिहारीलाल : विहार रत्नाकर (सं. जगन्नाथदास रत्नाकर) कुल 10 दोहे
7. घनानंद: घनानंद कविता (सं. विश्वनाथ प्रसाद मिश्र) कुल पाँच पद

संदर्भ ग्रंथ :

1. आदिकालीन काव्य (सं. वासुदेव सिंह, विश्वविद्यालय, प्रकाशन वारणासी)
2. कबीर : हजारीप्रसाद द्विवेदी
3. हिन्दी काव्य में निर्गुण संप्रदाय : पीताम्बर बड़थ्वाल
4. जायसी ग्रंथावली (भूमिका) : सं. रामचन्द्र शुक्ल
5. जायसी : विजयदेव नारायण साही
6. विद्यापति : शिवप्रसाद सिंह
7. लोकवादी तुलसीदास : विश्वनाथ त्रिपाठी
8. मीरा का काव्य : विश्वनाथ त्रिपाठी
9. भक्ति आंदोलन और सूरदास का काव्य : मैनेजर पाण्डेय

10. गोस्वामी तुलसीदास	:	रामचन्द्र शुक्ल
11. बिहारी	:	विश्वनाथ प्रसाद मिश्र
12. बिहारी का नया मूल्यांकन	:	बच्चन सिंह
13. सूर साहित्य	:	हजारीप्रसाद द्विवेदी
14. महाकवि सूरदास	:	नंद दुलारे वाजपेयी
15. तुलसी आधुनिक वातायन से	:	रमेश कुंतल मेघ
16. घनानंद कवित्त	:	विश्वनाथ प्रसाद मिश्र
17. मध्यकालीन बोध का स्वरूप	:	हजारीप्रसाद द्विवेदी
18. सनेह को मारग	:	इमरै बंगा
19. घनानंद	:	मनोहरलाल गौड
20. Mithila in the age of Vidyapati	:	Chaudhary Radhakrishna

प्रश्न-संख्या : MAH 1 30(Core Paper)

हिंदी कथा साहित्य : कहानी

यह पेपर अनिवार्य हैं।

पाठ परिचय :-

हिंदी गद्य के विकास के साथ हिंदी में कई साहित्यिक विधाओं का जन्म हुआ इनमें से एक कहानी है। इस पेपर का उद्देश्य हिंदी कहानी की विकास यात्रा को रेखांकित कर छात्रों में इस विधा के उद्भव एवं विकास की समझको पुष्ट करना है। अपने उद्भव एवं विकास-यात्रा में हिंदी कहानी युगीन परिस्थितियों एवं समसामयिक युग बोध से समावेशित होती रही है, जिनके कारण हर युग की कहानियों में प्रवृत्तिगत भिन्नता स्पष्ट रूप से दिखाई देती है। इस पेपर के तहत हिंदी कहानी के विकास के इतिहास में प्रवृत्ति गत बदलावों के एतिहासिक परिप्रेक्ष्य को रेखांकित कर छात्रों कों हिंदी कहानी की विकास-यात्रा की समझको ठोस आधार प्रदान करना है। हिंदी कहानी की इस विकास-यात्रा में कई साहित्यिक आंदोलन हुए जो हिंदी कहानी को सर्जनात्मक उर्जा प्रदान करते हैं। इनआंदोलनों की विशेषतओं को उजागर कर इन की साहित्यिक अर्थवत्त का विश्लेषण करना इस पेपर का ध्येय है। यह पेपर पाठ आधारित है। अनुमोदित कहानियों की व्याख्या एवं विश्लेषण के क्रम में छात्रों युगीन परिस्थितियों, प्रवत्तियों एवंतत्कालिन युगबोध से परिचित हो सकेंगे।

कहानी

1. उसने कहा था -चंद्रधर शर्मा गुलेरी
2. कफन - प्रेमचंद
3. करवा का व्रत -यशपाल
4. राजा निरबंसिया -कमलेश्वर
5. तिरिया चरित्र -शिवमूर्ति
6. मोहनदास -उदय प्रकाश

उपन्यास

7. गोदान -प्रेमचंद
8. शेखर:एक जीवनी -! अज्ञेय
9. बाणभट्ट की आत्मकथा हजारी प्रसाद द्विवेदी
10. मैला आंचल फणीश्वर नाथ रेणु
11. राग दरबारी श्रीलाल शुक्ल

पत्रकारिता प्रशिक्षण

प्रश्न-संख्या : MAH 1 40(Core Paper)

यह पेपर अनिवार्य हैं।

पत्रकारिता अर्थ,स्वरूप एवं प्रकार,

प्रिंट एवं इलेक्ट्रॉनिक मीडिया जनसंचार माध्यम

जनसंचार माध्यम अवधारणा एवं स्वरूप

सामाजिक विकास में जनसंचार माध्यमों की भूमिका

1)परंपरागत जनसंचार माध्यम

2)आधुनिक जनसंचार माध्यम

पत्रकारिता प्रमुख प्रिंट मीडिया परिभाषा एवं प्रकार

समाचार पत्र के विभिन्न विभागों का संगठनात्मक ढांचा, प्रशासनिक विभाग, संपादकीय विभाग, मुद्रण विभाग, वितरण विभाग, विज्ञापन विभाग का विस्तृत अध्ययन, प्रिंट मीडिया की आचार संहिता, प्रमुख प्रेस कानून एवं संहिता

इलेक्ट्रॉनिक मीडिया परिभाषा और परिभाषा

इलेक्ट्रॉनिक संचार के सिद्धांत